जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,बागेश्वर

उत्तराखंड के विद्यालयों में विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम की सफलता हेतु समुदाय का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने हेतु नेतृत्व

निर्देशन - डॉ. शैलेंद्र सिंह धपोला
प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बागेश्वर
समन्वयन-श्री संदीप कुमार जोशी,प्रवक्ता डायट बागेश्वर
सहयोग- डॉ.चंद्र मोहन जोशी, डॉ.संजय गुरुरानी,
श्री रवि कुमार जोशी,प्रवक्ता डायट बागेश्वर

लेखक मंडल- श्री संदीप कुमार जोशी डायट बागेश्वर
श्री सुरेश चन्द्र सती, प्र०अ० रा०उ०प्रा०वि० पिंगलो, बागेश्वर
श्री संजय सिंह पूना, प्र०अ०रा०प्रा०वि० जेठाई
श्री बिजय आनंद नौटियाल, श्री बृजेशजोशी सदस्य अजीम प्रेम जी फाउण्डेशन,बागेश्वर।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

मॉड्यूल क्रमांक –01

शीर्षक –उत्तराखण्ड के विद्यालयों में विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम की सफलता हेतु समुदाय का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने हेतु नेतृत्व।

क्षेत्र –भागीदारी का नेतृत्व करना

मॉड्यूल के उद्देश्य –

1. विद्यालय परिसर की सम्पूर्ण स्वच्छता हेतु एक नेतृत्वकर्ता में सकारात्मक गुणों का विकास करना।
2. विद्यालय स्वच्छता हेतु समुदाय का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने तथा प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नेतृत्वप्रदान करना।

की–वर्ड –विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम, स्वच्छ भारत अभियान, नेतृत्वकर्ता,

प्रस्तावना –

स्वच्छ भारत अभियान की अवधारणा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का एक महत्वपूर्ण स्वप्न था। जिसके द्वारा वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक छोटा–बड़ा तथा अमीर–गरीब का भेदभाव छोड़कर एक साथ मिलकर देश की स्वच्छता हेतु कार्य करें, उनके इसी स्वप्न को पूरा करने हेतु राष्ट्रपिता की 150वीं जयंती 02 अक्टूबर सन 2019 को भारत के यशस्वी माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सभी देशवासियों से अपील की कि वह स्वच्छ भारत अभियान में अपना सहयोग करें। स्वच्छ भारत अभियान में न केवल सहयोग करें बल्कि इसकी तस्वीरें अन्य लोगों को भी साझा करें,लोगों को अपने साथ जोड़े ताकि इस मिशन के द्वारा जन–जन के भीतर स्वच्छता जागरूकता के प्रति सकारात्मक परिवर्तन हो सके।

पृष्ठभूमि –

उत्तराखण्ड के राजकीय प्रारम्भिक शिक्षा विद्यालयों में अधिकतम 02 या 03 अध्यापको के अतिरिक्त विद्यालय के अन्य दैनिक कार्यों के सम्पादन हेतु सहायक स्टाफ की कोई तैनाती नहीं होती है। जिस कारण विद्यालय परिसर की साज–सज्जा का सम्पूर्ण दायित्व अध्यापको व विद्यार्थियों पर ही होता है।

सन्दर्भ –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय–05 बिन्दु 5.8 के अनुसार कहा गया है कि स्कूलों के काम के वातावरण और संस्कृतियों में आमूलचूल परिवर्तन करने का प्राथमिक लक्ष्य शिक्षकों की क्षमताओं को अधिकतम स्तर तक बढ़ाना होगा ताकि वे अपना काम प्रभावी ढंग से कर सकें और यह सुनिश्चित हो सके कि वे शिक्षको छात्रों, अभिभावको, प्रधानाध्यापको और अन्य सहायक कर्मचारियों के समावेशी समुदाय का हिस्सा बन सकें।

चुनौतियॉ–

किसी भी विद्यालय में प्रधानाध्यापक का नेतृत्वकर्ता के रूप में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षा आयोग ने कहा है कि राष्ट्र के भाग्य का स्वरूप विद्यालयों में बनता है अर्थात विद्यालय के स्वरूप को सजा सवार कर बनाये रखने का पूर्ण दायित्व विद्यालय के प्रधानाध्यापक व शिक्षकों का होता है। वह अपनी कार्यकुशलता, बौद्धिक क्षमता, मानवीय गुणों व नेतृत्व से अपने विद्यालय को विशिष्ट श्रेणी मे खड़ा कर सकता है। उत्तराखण्ड के अधिकांश राजकीय विद्यालयों में शिक्षक एवं बिद्यार्थी आपसी सहयोग से स्वच्छता का कार्य करते हैं। जिससे प्रतिदिन विद्यालय में आने के बाद स्वच्छ परिवेश का निर्माण व दिनभर विद्यार्थियों को स्वच्छ बनाये रखना एक नेतृत्वकर्ता के लिए कठिन चुनौती साबित होता है। इस हेतु विद्यालय के हितधारक समुदाय के सदस्यों के सहयोग से मिलकर स्वच्छता कार्य करने से एक नई कार्य संस्कृति का विकास किया जा सकता है।

Video link - https://www.youtube.com/watch?v=c78XGjM-QNk
(कौशांबी के एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में स्कूली बच्चों से झाड़ू लगवाते हुए वीडियो)

विचारणीय प्रश्न –

01. एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यालय स्वच्छता हेतु आप किन–किन चुनौतियों का सामना करते हैं।

.....

.....

.....

.....

02. अधिकांश विद्यालयों में प्रतिदिन स्वच्छता का अधिकांश कार्य छात्र–छात्राओं द्वारा किया जाता है आपके विचार यह किया जाना कितना उचित है ? यदि हॉ, तो इस कार्य हेतु समाज के नजरिये को आप किस में रूप में देखते हैं।

.....

.....

.....

.....

केस स्टडी –

उत्तराखण्ड के जनपद बागेश्वर का सुदूरवर्ती रा०उ०प्रा0वि0 पिंगलो, यह स्थान प्रसिद्ध पर्यटक रमणीय स्थल कौसानी से 35किमी. दूर लहलहाते चाय–बागानों के मध्य स्थित है। इस विद्यालय के समीप ही गढ़वाल हिमालय के प्रसिद्ध गढ़ बौधानगढ़ी के अंग्यारी महादेव नामक पवित्र उद्गम स्थल से निकली, कल–कल बहती गोमती नदी की धारा अनवरत रूप से प्रवाहित हो रही है।

यह विद्यालय वर्ष उत्तराखण्ड सरकार द्वारा वर्श 2008 में स्थापित हुआ है। जहां कक्षा 06 से 08 तक के विद्यार्थी शिक्षाध्ययन करने हेतु आते हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय ने विद्यालय स्थापना के समय उसे एक मॉडल विद्यालय के रूप में विकसित करने का स्वप्न सजोंरखा था। प्रारम्भ में इस विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या 30 थी। प्रधानाध्यापक ने अपने

सहयोगी–अध्यापकों के साथ 06 वर्षों तक अनवरत विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने हेतु कार्य किया। विद्यालय में पाठ्यक्रम के साथ–साथ पाठ्य–सहगामी क्रिया–कलापों, खेल–कूद, स्वच्छ पर्यावरण, गुणवत्तापूर्ण मध्याहन भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा पर लगातार सपोर्ट दिया जाने लगा। प्रधानाध्यापक ने विद्यालय समय के अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन किया। बच्चों के स्तर में शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए अवकाश के दिनों में भी पठन पाठन कार्य किया गया। विभिन्न नवाचारी गतिविधियों को संचालन किया गया। कम्प्यूटर शिक्षा के लिए एनजीओ का सहयोग लिया गया। वोके ानल कोर्स के तहत कम्प्यूटर कोर्स के अलावा सिलाई प्रशिक्षण का संचालन किया गया। लगातार अथक परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थी पढ़ाई–लिखाई के साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों, खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान कार्यक्रमों, क्विज, प्रतियोगी परीक्षाओं आदि में बेहतर प्रदर्शन करने लगे।

विद्यार्थियों के बेहतर प्रदर्शन व विद्यालय के प्रति वढ़ते विश्वास से सेवित क्षेत्र के अभिभावकों का बच्चों के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्ति की चिन्ता दूर हो गई। विद्यालय की प्रगति देखकर कब अभिभावकों का झुकाव विद्यालय के प्रति हो गया, यह पता ही न चला। 02 अक्टूबर 2014 का वह दिन जब गांधी जयन्ती के शुभ–अवसर पर विद्यालय में अभिभावक उपस्थित हुए तो विद्यालय परिवार के प्रति अभिभावकों का सकारात्मक रुझान गद्गद करने वाला था।

विद्यालय में आमंत्रित अभिभावकों से चर्चा के समय जब प्रधानाध्यापक ने अभिभावको के समक्ष विद्यालय की स्वच्छता कार्य में आनेवाली परेशानियों को रखते हुए बताया गया कि विद्यार्थियों द्वारा ही कक्षा–कक्षों तथा परिसर की स्वच्छता की जाती है। वे प्रातः काल साफ सुथरे बनकर आते है लेकिन झाड़ू लगाने तथा अन्य स्वच्छता कार्य करने से बच्चे गन्दे हो जाते हैं। जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस हेतु प्रधानाध्यापक ने अभिभावकों के समक्ष जब यह प्रस्ताव रखा कि बच्चों के स्थान पर यदि उनके अभिभावक प्रतिदिन विद्यालय की स्वच्छता में सहयोग करें तो इस समस्या को दूर किया जा सकता है। इस प्रस्ताव को सभी अभिभावकों द्वारा सहर्श स्वीकार कर लिया गया।

इस **स्वच्छता सहयोग कार्यक्रम** क्रियान्वयन हेतु विद्यालय में चार–चार अभिभावकों के 20 समूह बनाये गये तथा तय किया गया कि प्रतिदिन निर्धारित समूह अपने क्रमानुसार विद्यालय

पहुँच कर विद्यालय में स्वच्छता कार्य करेंगे। यह कार्य अभिभावकों द्वारा खुशी–खुशी किया जाने लगा जो कि वर्तमान तक अनवरत जारी है। इससे प्रेरणा लेकर संकुल संसाधन केन्द्र पिंगलो के कुछ अन्य विद्यालयों में भी यह स्वच्छता पहल शुरू की गई। इस पहल का परिणाम यह

फोटो–साभार, प्रधानाध्यापक राजकीय उ०प्रा0वि0 पिंगलों, जनपद–बागेश्वर(उत्तराखण्ड)

हुआ कि अभिभावक नियमित रूप से विद्यालय में आकर विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम में सहभागी बने उनका विद्यालय के प्रति रुझान बढ़ा तथा उनके बच्चे विद्यालय के सम्पूर्ण अवधि में स्वच्छ रहने लगे। विद्यालय के इस अभिनव प्रयास की विद्यालय भ्रमण हेतु पहुॅची यूनिसेफ की टीम द्वारा भी प्रशंसा की गई।

Y / REGION

THE TIMES OF INDIA, NEW DELHI / DEHRADUN
THURSDAY, OCTOBER 6, 2016

In this Bageshwar village, parents take turns to keep school clean

Arpita Chakrabarty | TNN

Almora: Hours before a government school in a tiny hamlet of Bageshwar district comes alive to the hustling and bustling of students, a group of villagers, armed with brooms, flock its premises every morning just to make it clean and tidy before their children arrive. Taking the Swachh Mission to another level, people in Pinglown village go to the government junior high school daily to ensure that it is squeaky clean. Close to 90 parents voluntarily take part in the cleanliness drive.

Every morning, about two hours before the beginning of the classes, they sweep the classrooms, benches, garden and even toilets. It got the cleanest school award by the chief minister Harish Rawat last year. "Every day, a group of five person cleans the school. We pick up wrappers, pens, plastics and whatever the children leave in the classroom and garden. We clean the toilets and water tank. We also do a bit of gardening and have developed a garden, whose produce is used for mid-day meals," said Deenanath Goswami, one of the parents who take part in the drive. Goswami, with others, arrives at the school around 8.30am and finishes the task in an hour. The classes start at 10am. The school, with 102 students and three teachers, has nine water taps and liquid soaps to wash hands.

Suresh Sati, the principal of the school, said that he had convinced the parents to take part in the cleanliness drive. "It was not difficult to convince the parents," he said.

Another feather was added to the school's hat on Monday when it became the first junior high school in the state to have it own website. The school has four computers and three WiFi dongles to connect to the computers with internet. Sati has also created email ids of all the school children. Aakash Saraswat, district education officer (basic), told TOI: "This is the first time in Uttarakhand that a junior high school has got a website of their own."

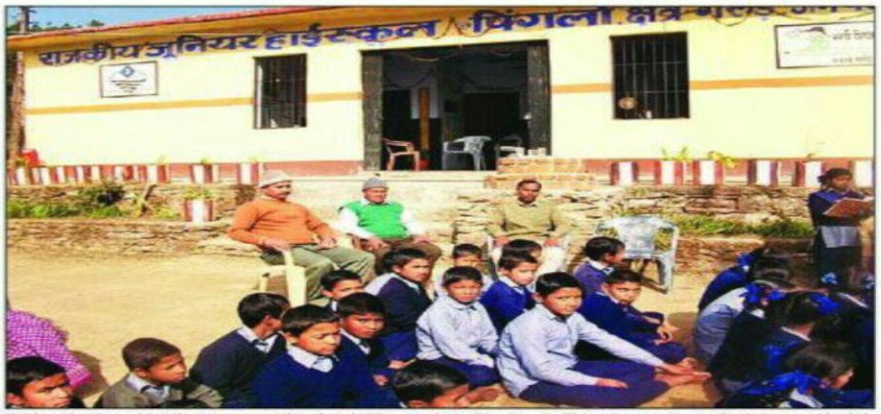

Taking the Swachh Mission to another level, 90 parents in Pinglown village have voluntarily taken up the job of maintaining the cleanliness in the government junior high school on a daily basis

स्वच्छता में जूहा पिंगलों ने झटके तीन पुरस्कार

अमर उजाला ब्यूरो

बागेश्वर। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के स्वच्छता पखवाड़ा के तहत जिला स्तर पर 32 विद्यालयों को पुरस्कृत किया गया। इनमें राजकीय जूनियर हाईस्कूल पिंगलों ने तीन श्रेणियों में सर्वाधिक तीन पुरस्कार प्राप्त किए।

सीईओ सभागार में आयोजित स्वच्छता पुरस्कार कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए डीएम रंजना राजगुरु ने कहा कि स्वच्छता को आदत में शामिल करना होगा। तभी स्वच्छ भारत के सपने को साकार किया जा सकता है। एचआरडी मंत्रालय की ओर से ग्रीन श्रेणी में जूहा पिंगलों, टकनार, प्राबि चौड़ा, टिटोली, हाईस्कूल बहुली, जूहा रैथल, प्राबि गलई को ओवर ऑल चैंपियन रहे। सब केटेगिरी में केंद्रीय विद्यालय कौसानी, जीआइसी रवाईखाल, चौंरसों, बहुली, जूहा पिंगलों, उड़खुली, प्राबि लेटी, पिंगलों, पाये, बुंगा, रौठाकुरसाली, मंडलसेरा, बिलखेत, बागेश्वर प्रथम, गलई, प्राबि मटेना, चौंरसों, राइका सिरकोट को पुरस्कृत किया गया।

बागेश्वर में स्वच्छता पुरस्कार प्राप्त करते शिक्षक। अमर उजाला

राइंका मैगड़ीस्टेट में भाषण प्रतियोगिता अमर उजाला

स्वच्छता पखवाड़े के तहत आयोजित निबंध प्रतियोगिता में जूहा पिंगलों के राहुल, भतरौला की पूनम गोस्वामी, राइका सिरकोट की लता सती, पेंटिंग प्रतियोगिता में प्राबि कपकोट की स्नेहा, कंट्रीवाइड कपकोट की कविता, अयारतोली की योगिता, प्राबि परेणा की विनीता पहले तीन स्थान पर रहीं। वहां सीईओ हरीश रावत, एआरटीओ केसी फ्लड़िया, डॉ. एनएस टोलिया, एसडीएफओ वीएस शाही, डॉ. केएन कांडपाल, प्राचार्य डायट डॉ. शैलेंद्र धपोला, सुरेश सती, उमेश जोशी, दीप जोशी आदि थे।

ममता, प्रशांत ने सबसे अच्छा भाषण दिया

गरुड़ (बागेश्वर)। कुशल सिंह खाती राइंका मैगड़ीस्टेट में वन रेंज बैजनाथ और कॉलेज परिवार की ओर से स्वच्छता पखवाड़ा के तहत भाषण प्रतियोगिता संपन्न हुई। प्रशांत और ममता ने सबसे अच्छा भाषण देकर बाजी मारी।

प्रधानाचार्य घनेंद्र कुमार कटियार की देखरेख में हुई प्रतियोगिता प्रशांत सिंह, ममता गोस्वामी ने प्रथम, सरस्वत तिवारी ने दितीय दिगंबर सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संचालन एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी दीपक चंद्र ने किया। मौके पर वन दरोगा चंदन सिंह टंगणिया, हेमंत तिवारी, शुभा तिवारी, सुनीता, अनीता, मंजू, कुलदीप सिंह, परवीन कुमार, अजय कुमार आदि थे। उधर इंटर कॉलेज गागरीगोल में स्वच्छता पखवाड़ा के तहत हुई निबंध, चित्रकला, भाषण प्रतियोगिता में रिंकू आर्या, बम बहादुर, सीमा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अव्वल बच्चों को जिपं सदस्य शिव सिंह बिष्ट ने पुरस्कृत किया।

जूनियर वर्ग निबंध प्रतियोगिता में रिंकू, रोहित, बबली, चित्रकला में बम बहादुर, रिंकू, मनीष, सीनिसर वर्ग निबंध में सीमा लार्ड, सरिता आर्या, ज्योति, पूनम, दिव्या, चित्रकला में भावना, पूजा, सूरज, भाषण में सरिता, नीलम, निकिता पहले तीन स्थान पर रहे। जिपं सदस्य बिष्ट ने कॉलेज में बालिका शौचालय के निर्माण के लिए एक लाख रुपये देने की घोषणा की। वहां कॉलेज के प्रधानाचार्य नंदन सिंह अल्मिया, किसन थायत, हेम उपाध्याय, अभय नेगी, शंकर रावत आदि थे। ब्यूरो

समाचार पत्रों की नजर में राजकीय उ०प्रा०वि० पिंगलों,

जनपद-बागेश्वर(उत्तराखण्ड)

सराहनीय : स्कूल खर्च के लिए समूह बनाकर जुटाई जाती है धनराशि

मुंह नहीं ताकते शिक्षक व अभिभावक

अशोक लोहनी, बागेश्वर

शिक्षकों की लापरवाही पर अंकुश लगाने की सरकार कोशिश करती है तो कई शिक्षक इसका विरोध करते दिखते हैं। शैक्षिक कार्य न होने के लिए विद्यालय में फर्नीचर, भवन आदि शैक्षिक सामग्री की कमी का बहाना बनाते हैं। परंतु जनपद में राजकीय जूनियर हाईस्कूल पिगलो के अभिभावकों ने नई पहल कर स्वयं सहायता समूह बनाया है। यह स्वयं सहायता समूह ही विद्यालय की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। विद्यालय में स्वच्छता अभियान को लेकर भी अभिभावक जागरूक हैं। वे स्वयं विद्यालय में सफाई भी करते हैं।

गरुड़ विकास खंड के राजकीय जूनियर हाईस्कूल में 113 बच्चे अध्ययनरत हैं। अन्य विद्यालयों की तरह ही यहां पर भी कई सुविधाओं का अभाव है। अन्य विद्यालयों की तरह यहां व्यवस्था के लिए शिक्षकों व अभिभावकों ने कभी सरकार का मुंह नहीं देखा। बल्कि यहां के अध्यापकों, व अभिभावकों ने इसके लिए खुद पहल कर स्कूल की बेहतरी के लिए प्रयास किया। शिक्षकों की मेहनत रंग लाई और अभिभावकों ने स्वयं सहायता समूह में सहभागिता शुरू कर दी। इसके तहत अभिभावकों के साथ मिलकर शिक्षकों ने स्वयं सहायता समूह बना लिया। जिसमें प्रतिमाह शिक्षक व अभिभावक अपनी स्वेच्छा से राशि जमा करते हैं। इस राशि से विद्यालय में लघु निर्माण, स्वच्छता कार्य, शैक्षिक सामग्री, खेल सामग्री आदि खरीदी जाती है। साथ ही गरीब बच्चों के लिए गर्म कपड़े, पुस्तकें आदि सामान खरीदकर वितरित किया जाता है। प्रधानाध्यापक सुरेश सती व अध्यापक दीप पांडे ने बताया कि इस कार्य में अभिभावकों का निरंतर सहयोग मिल रहा है।

- अन्य शिक्षकों के लिए कायम की मिसाल

राजूहा पिगलो के अभिभावकों व अध्यापकों द्वारा विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। अब तक समूह के प्रयास से विद्यालय में दराई, बोर्ड आदि शैक्षिक सामग्री खरीदी है। शीघ्र ही विद्यालय के लिए समूह यूपीएस खरीद रहा है। यहां के एसएमसी अध्यक्ष ने गत सप्ताह जनपद में बेस्ट एसएमसी अध्यक्ष के रूप में राज्य में प्रतिभाग किया है।

- आकाश सारस्वत खंड शिक्षा अधिकारी गरुड़

बायोमैट्रिक मशीन लगाने के प्रयासों की सराहना

बागेश्वर: पिगलो के प्रधानाध्यापक सुरेश सती, अध्यापक दीप पांडे समेत अभिभावक समिति के अध्यक्ष बलवंत सिंह नेगी ने माध्यमिक विद्यालयों में बायोमैट्रिक मशीन लगाने की सराहना की है। कहा कि सरकार को शीघ्र ही इसे कार्यरूप दिया जाना चाहिए। कहा कि प्राथमिक विद्यालयों में भी इस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए। ताकि लापरवाह शिक्षक-शिक्षिकाओं की लापरवाही पर अंकुश लग सके।

प्रदेश स्तर पर पहल की सराहना

बागेश्वर: पिगलो में बने स्वयं सहायता समूह की राज्य संदर्भ केंद्र में प्रशंसा हुई है। 22 जनवरी को देहरादून में आयोजित बैठक में पिगलो के अभिभावक समिति के अध्यक्ष बलवंत सिंह नेगी ने इस कार्य की जानकारी दी। जिस पर अपर निदेशक राज्य परियोजना कुसुम पंत ने शीघ्र ही विद्यालय का दौरा करने व इस व्यवस्था को अन्य विद्यालयों में भी लागू करने के लिए प्रेरित किए जाने की बात कही। उन्होंने इस कार्य के लिए विद्यालय की प्रशंसा की। कहा कि इस तरह के स्वैच्छिक कार्य प्रत्येक विद्यालय में होने चाहिए।

फोटो–साभार, प्रधानाध्यापक राजकीय उ०प्रा0वि0 पिंगलों,जनपद–बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

Video link - https://www.youtube.com/watch?v=0Cr4LHyTVSM

(राजकीय उ०प्रा०वि० पिंगलों, विकास खण्ड गरूड़ जनपद-बागेश्वर विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम)

चर्चा प्रश्न –

1. आपके विचार से विद्यालय में अभिभावकों ने स्वच्छता कार्य हेतु सहयोग देना क्यों स्वीकार किया होगा।

.....

.....

.....

.....

2. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप विद्यालय स्वच्छता और कौन से तरीके अपना सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

आपके अपने विचार –क्या आप भी अपने विद्यालय में स्वच्छता कार्यक्रम की सफलता के लिए कोई नवाचार करने की इच्छा रखते है, यदि हॉ तो वह क्या हो सकता है।

.....

.....

.....

.....

निष्कर्ष–

राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान की सफलता हेतु विद्यालय के द्वारा बच्चों के भीतर रोपित किए गये संस्कारों पर निर्भर करती है। बच्चे ही भविष्य के राष्ट्र की आधारशिला है। स्वच्छ वातावरण में ही बेहतर शिक्षा प्रदान की जा सकती हैं। विद्यालय प्रमुखों को यह समझने की आवश्यकता है कि बच्चों की प्रगति के माध्यम से ही समुदाय को विद्यालय के साथ जोड़ा आ सकता है। यदि समुदाय का विद्यालय के प्रति विश्वास जाग्रत हो गया तो वह विद्यालय की प्रगति हेतु कंधे से कंधे मिलाकर सहयोग देने को तत्पर रहता है। विद्यालय **स्वच्छता सहयोग कार्यक्रम** की सफलता इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

Action Steps:-

एक विद्यालय प्रमुख के नाते इस निम्नलिखित छोटे–छोटे उपायो द्वारा इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकते हैं ।

1. विद्यालय प्रमुख द्वारा तनमयता से बच्चों के शैक्षिक स्तर को उठाने हेतु कार्ययोजना बनाना।
2. शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों हेतु अपने स्टाफ के सहयोग से पूरी तत्परता से कार्य से किया जाना।
3. विद्यालय में प्रमुख राष्ट्रीय पर्वों में समुदाय के सदस्यों को सादर आमन्तित किया जाना।
4. समुदाय से से विद्यालय की प्रगति और भौतिक वातावरण पर चर्चा किया जाना।
5. अभिभावकों के दृष्टिकोण से परिचित होकर उनसे विद्यालय की समस्याओ के समाधान हेतु सहयोग प्राप्त किया जाना।

सन्दर्भ –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020: शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार

उत्तराखण्ड उम्मीद जगाते शिक्षक – 3 : 2017 अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन

भारत का राष्ट्रीय पोर्टल –India-gov-in

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005